।। अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगीराज परब्रह्म
श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय ।।

शिवसाई

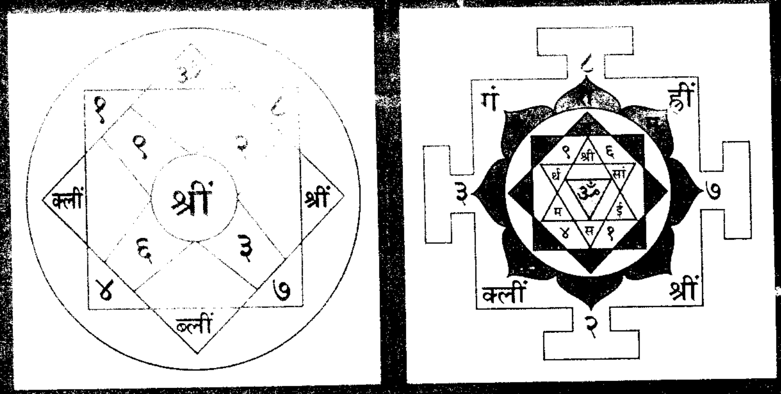

श्री साईनाथ सिध्द बीसा यंत्र

श्री साईबाबा व्रत कथा

सुख, शांति, समृध्दि एवं यश प्राप्ति हेतु गुरुवार का अद्भुत चमत्कारी व्रत

सदगुरु श्री साईं की महानता

"हे साईं, मैं आपकी चरण वंदना कर आपसे 'शरण' की याचना करता हूँ, क्योंकि आप ही इस भवसागर में मेरी नैया के खिवैया हैं।" यदि ऐसी ही धारणा लेकर हम उनका भजन पूजन करें तो यह निश्चित है कि हमारी समस्त इच्छाएँ शीघ्र पूर्ण होंगी और हमें अपने परम लक्ष्य की प्राप्ति हो जाएगी। आज निन्दित विचारों के तट पर माया-मोह के झंझावात से धैर्य रूपी वृक्ष की जड़ें उखड़ गई हैं। अहंकार रूपी वायु की प्रबलता से हृदय रूपी समुद्र में तूफान उठ खड़ा हुआ है, जिसमें क्रोध और घृणा रूपी घड़ियाल तैरते हैं और अहंभाव एवं संदेह रूपी नाना संकल्प-विकल्पों के भँवरों में निंदा, घृणा और ईर्ष्यारूपी अगणित मछलियाँ विहार कर रही हैं। यद्यपि यह समुद्र इतना भयानक है, फिर भी सद्गुरु साईं महाराज उसमें अगस्त्य स्वरूप ही हैं। इसलिए भक्तों को किंचित्मान भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

श्री सच्चिदानंद साईं महाराज को साष्टांग नमस्कार करके उनके चरण पकड़कर हम सब भक्तों के कल्याणार्थ उनसे प्रार्थना करते हैं कि, "हे साईं हमारे मन की चंचलता और वासनाओं को दूर करो। हे प्रभु! तुम्हारे श्रीचरणों के अतिरिक्त हममें किसी अन्य वस्तु की लालसा न रहे। तुम्हारी यह कथा घर-घर पहुँचे और इसका नित्य पठन-पाठन हो और जो भक्त इसका प्रेमपूर्वक अध्ययन करें, उनके समस्त संकट दूर हों।"

श्री साईं महिमा

शिर्डी गाँव में नीम-वृक्ष के तले, तरुणावस्था में प्रकट भए साईं।।

किसी शासन, गद्दी, पीठ, आश्रम आदि को स्थापित करने में जिसने कदापि रुचि नहीं दिखाई और न ही अपने उत्तराधिकारी नियुक्त करने चाहे– ऐसे अनोखे संत का नाम है–"शिर्डी के साईंबाबा।"

साईंबाबा के जन्म और माता-पिता के बारे में जानकारी अँधेरे की परतों में लिपटी है। साईंबाबा के भक्तगण इस तथ्य पर दो भागों में विभक्त हैं कि

बाबा जन्म से हिन्दू थे या मुसलमान। वे शिर्डी में नीम-वृक्ष के तले सोलह वर्ष की तरुणावस्था में स्वयं भक्तों के कल्याणार्थ प्रकट हुए थे। उस समय भी वे पूर्ण ब्रह्मज्ञानी प्रतीत होते थे। यद्यपि वे देखने में तरुण प्रतीत होते थे, परन्तु उनका आचरण महात्माओं के सदृश था। वे त्याग और वैराग्य की साक्षात् प्रतिमा थे। बाबा का बसेरा एक टूटी-फूटी मस्जिद थी, जिसे वे द्वारका माई कहा करते थे।

उनका सभी के लिए उपदेश था–"राम (जो हिन्दुओं के भगवान हैं) और रहीम (जो मुसलमानों के खुदा हैं) एक ही हैं और उनमें किंचित् मात्र भी भेद नहीं है, फिर तुम उनके अनुयायी क्यों पृथक-पृथक रहकर परस्पर झगड़ते हो? अज्ञानी बालकों! एकता साध कर और एक साथ मिल-जुल कर रहो।"

साईंबाबा में अपने भक्तों के स्वप्न में प्रकट होने की शक्ति थी और अन्नपूर्णा सिद्धि थी। बाबा के जीवनकाल में उनके अद्भुत चमत्कारों की अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। अपने भक्तों पर उनकी कृपा सदा बनी रहती थी। श्री साईंबाबा के समाधिस्थ होने के पश्चात् भी उनकी लीलाएँ जारी हैं और अक्सर देखने में भी आती है, जिससे सिद्ध होता है कि बाबा अभी भी विद्यमान हैं और पूर्व की भाँति अपने भक्तों को सहायता पहुँचाया करते हैं। अत: प्रत्येक भक्त समस्त चेतनाओं, इन्द्रियों-प्रकृतियों और मन को एकाग्र कर बाबा के पूजन और सेवा में लगाकर अपनी शुभ मनोकामनाओं को पूर्ण कर सुख, शांति और समृद्धि प्राप्त कर सकता है।

प्रभु श्री साईं दया कर आशीष दो कि जो आपके इस साईंबाबा व्रत को पूर्ण कर लेगा, उसकी आप सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करेंगे। बाबा! भक्त आपको प्रसन्न करने के लिए तथा आपकी भक्ति में लीन रहने के लिए आपका यह अद्भुत व्रत रखते हैं।

नकली पुस्तक से सावधान। असली पुस्तक की पहचान करें, सिर्फ हमने ही गहन शोध कर सही व संपूर्ण विधि-विधान युक्त कथा उद्धृत की हैं। मुखपृष्ठ पर हमारा मोनोग्राम व प्रथम पृष्ठ पर नाम 'सरदार त्रिलोचन सिंह बुकसेलर, इन्दौर-1' देखकर ही पुस्तक खरीदें।

फलादेश

श्री साईंबाबा का गुरुवार व्रत रखने से निम्न फल प्राप्त होते हैं–

१. पुत्र प्राप्ति, २. कार्य सिद्धि, ३. वर प्राप्ति, ४. वधू प्राप्ति, ५. खोया धन मिले, ६. जमीन-जायदाद मिले, ७. धन मिले, ८. साईं दर्शन, ९. शांति, १०. शत्रु शांत हों, ११. व्यापार में वृद्धि, १२. परीक्षा में सफलता, १३. पति का खोया प्रेम मिले, १४. बाँझ को भी औलाद हो, १५. इच्छित वस्तु की प्राप्ति, १६. यात्रा योग मिले, १७. खोया रिश्तेदार मिले, १८. रोग निवारण, १९. कार्य सिद्धि, २०. मनोकामना पूर्ति इत्यादि।

व्रत की सही विधि

श्री साईंबाबा का यह बहुत ही चमत्कारिक व्रत है। इस व्रत को प्रारंभ करने के पूर्व हथेली के आकार का एक नया सफेद कपड़ा लेकर उसे गीली हल्दी में डुबाकर सुखा लें। गुरुवार को प्रात: अथवा सायं स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें तत्पश्चात् पूर्व दिशा की ओर स्वच्छ कपड़ा बिछाकर एक आसन रखें एवं उस पर साईंबाबा की मूर्ति अथवा चित्र स्थापित करें। अब साईंबाबा को चंदन/कुमकुम का तिलक लागाए, ताजे फूलों की माला चढ़ाएं, दीपक जलाएं एवं अगरबत्ती-धूपबत्ती भी लगाएं।

इन तैयारियों के पश्चात् बाबा के सामने बैठकर पहले से तैयार हल्दी वाले सूखे पीले कपड़े में एक सिक्का रखकर जिस कार्य सिद्धि के लिए व्रत रख रहे हैं, उस कार्य को निर्विघ्न पूरा करने के लिए साईंबाबा से सच्चे

दिल से प्रार्थना करते हुए उस सिक्के को कपड़े में लपेटकर गठान बाँध दें। अब आसन पर विराजित साईंबाबा के चरणों में इसे रख दीजिए। अपने मन में सामर्थ्य अनुसार ५,७,९,११ अथवा २१ गुरुवार व्रत रखने का प्रण करें (मन्नत माने)। (यह सभी सिर्फ प्रथम गुरुवार को मन्नत मानते समय करना चाहिए, बाद में प्रत्येक गुरुवार को विधि अनुसार केवल व्रत कथा का पाठ करना चाहिए।)

प्रत्येक गुरुवार को व्रत आरंभ करते समय इस पुस्तक के मुखपृष्ठ एवं प्रथम पृष्ठ पर दिए गए साईंबाबा के स्वरूप को प्रणाम करें। तत्पश्चात् बाबा की तस्वीर/मूर्ति पर कुछ फूलों की पंखुड़ियाँ को अर्पित करते हुए श्री साईं अष्टोत्तरशत नामावली का पाठ करें। इसके बाद श्री साईंबाबा व्रत कथा के छ: अध्याय पढ़ें और साईंबाबा का ध्यान करें। आरती द्वारा कथा समाप्त करें और प्रसाद के रुप में घर पर बनाई खिचड़ी अथवा मिठाई या फल सबको बाँटें एवं स्वयं ग्रहण करें।

इस प्रकार श्री साईंबाबा व्रत की विधि पूर्ण होती है। ऐसा व्रत करने से आने वाले सभी विघ्न दूर हो जाते हैं। जीवन में सरलता, सद्बुद्धि तथा पवित्रता आ जाती है। घर से गरीबी-निर्धनता दूर होती है। क्लेश-दु:ख-दोष आदि दूर हो जाते हैं तथा शांति-आनंद एवं उल्लास का आगमन होता है। यदि ऐसा व्रत सम्पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास तथा विधिपूर्वक-पूजन के सहित किया जाये, तो आर्थिक–सामाजिक–मानसिक अड़चनें–बाधाएँ दूर होती हैं।

इस व्रत का शुभ असर, किसी न किसी रूप में कम समय में अनुभव होने लगता है। मन में अपार शांति का अनुभव होता है।

आपके द्वारा पुस्तक प्राप्त करने वाला स्नेहीजन यदि आपकी प्रेरणा से इस व्रत को रखेगा तो उतनी ही मात्रा में आपकी भाग्यवृद्धि, पुण्यवृद्धि तथा सुख-समृद्धि में अवश्य वृद्धि होगी।

माने गए गुरुवार पूरे होने के पश्चात् विधिपूर्वक एवं इस पुस्तक में आगे लिखी गई रीति द्वारा उद्यापन करना चाहिए।

व्रत रखने के सरल नियम

१. साईं भक्तों को प्रेमपूर्वक तथा श्रद्धा से साईं बाबा का व्रत रखना चाहिए। स्मरण रखें कि मन में बैर रखकर कभी भी साईं के घर से प्राप्ति नहीं हो सकती।

२. यह सरल व्रत सभी स्त्री-पुरुष यहाँ तक कि बच्चे भी रख सकते हैं।

३. व्रत को शुरू करते समय ५, ७, ९, ११ अथवा २१ गुरुवार की मन्नत रखनी चाहिए।

४. स्मरण रखें कि व्रत के दौरान भूखे ना रहें। फलाहार करके यह व्रत किया जा सकता है। भोजन मीठा, नमकीन कैसा भी हो सकता है। प्याज आदि के इस्तेमाल पर रोक नहीं है।

५. यह व्रत सरल होने के साथ ही बहुत चमत्कारी है। माने गए प्रत्येक गुरुवार को विधिपूर्वक व्रत रखने से इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

६. यह व्रत किसी भी गुरुवार को बाबा की प्रतिमा या चित्र के समक्ष 'धूप-अगरबत्ती' कर शुरू किया जा सकता है। जिस कार्य-सिद्धि के लिए व्रत कर रहे हो, उसके लिए बाबा से मन ही मन पवित्र हृदय से प्रार्थना करें।

७. साईंबाबा का यह व्रत कभी भी सूतक, पादक, श्राद्ध इत्यादि में भी रखा जा सकता हैं।

८. यदि व्रत के दौरान किसी गुरुवार को आप यात्रा पर या बाहर (निवास शहर या गाँव के) हो तो उस गुरुवार को छोड़कर उसके बाद के गुरुवार को व्रत करें।

९. यदि किसी कारणवश किसी गुरुवार व्रत ना कर पाएँ तो उस गुरुवार को गिनती में न लेते हुए मन में किसी प्रकार की शंका ना रखते हुए अगले गुरुवार से व्रत जारी रखें एवं माने हुए गुरुवार पूरे कर व्रत का उद्यापन करें।

१०. एक बार मन्नत अनुसार व्रत पूर्ण करने के पश्चात् फिर मन्नत कर सकते है और फिर व्रत कर सकते हैं।

व्रत का उद्यापन

१. मन्नत के गुरुवार पूरे होने पर व्रत का उद्यापन करना चाहिए। इस दिन कुछ गरीबों को भोजन कराना चाहिए एवं पशु-पक्षियों को भोजन डालना चाहिए।

२. व्रत करने वाले को जो सुख-शांति व लाभ प्राप्त होगा, उसमें और वृद्धि करने तथा इच्छित मनोकामना को परिपूर्ण करने हेतु व्रतधारी को चाहिए कि वह अपने स्नेहीजनों को भी इस व्रत का माहात्म्य समझाएँ। इसके लिए 'सरदार त्रिलोचनसिंह बुक सेलर, इन्दौर-१' द्वारा प्रकाशित 'श्री साईंबाबा व्रत कथा' की यथाशक्ति सात, ग्यारह, इक्कीस, इक्यावन, एक सौ एक या अधिक पुस्तकें बाँटें।

३. जो पुस्तकें बाँटनी हैं, उनके आवरण पर श्री साईं बाबा के चित्र पर तिलक लगाकर श्रद्धापूर्वक अपने स्वजनों को देवें।

४. उपरोक्त विधि से व्रत रखने एवं उद्यापन करने से आपकी शुभ मनोकामनाएँ अवश्य पूर्ण होंगी यह निश्चित जानें।

श्री साईं अष्टोत्तरशत नामावली

१. ॐ श्री साईंनाथाय नमः।। २. ॐ श्री साईं लक्ष्मीनारायणाय नमः।। ३. ॐ श्री साईं कृष्णरामशिवमारुत्यादि रूपाय नमः।। ४. ॐ श्री साईं शेषशायिने नमः।। ५. ॐ श्री साईं गोदावरीतटशीलधीवासिने नमः।। ६. ॐ श्री साईं भक्तहृदालयाय नमः।। ७. ॐ श्री साईं सर्वहृन्निलयाय नमः।। ८. ॐ श्री साईं भूतावासाय नमः।। ९. ॐ श्री साईं भूतभविष्यद्-भाववर्जिताय नमः ।। १०. ॐ श्री साईं कालातीताय नमः।। ११. ॐ श्री साईं कालाय नमः।। १२. ॐ श्री साईं कालकालाय नमः।। १३. ॐ श्री साईं कालदर्पदमनाय नमः।। १४. ॐ श्री साईं मृत्युञ्जयाय नमः।। १५. ॐ श्री साईं अमर्त्याय नमः।। १६. ॐ श्री साईं मर्त्याभयप्रदाय नमः।। १७. ॐ श्री साईं जीवधाराय नमः।। १८. ॐ श्री साईं सर्वाधाराय नमः।। १९. ॐ श्री साईं भक्तावनसमर्थाय नमः।। २०. ॐ श्री साईं

भक्तावनप्रतिज्ञाय नमः।। २१. ॐ श्री साईं अन्नवस्त्रदाय नमः।। २२. ॐ
श्री साईं आरोग्यक्षेमदाय नमः।। २३. ॐ श्री साईं धनमाङ्गल्यप्रदाय
नमः।। २४. ॐ श्री साईं ऋद्धिसिद्धिप्रदाय नमः।। २५. ॐ श्री साईं
पुत्रमित्रकलत्रबन्धुदाय नमः।। २६. ॐ श्री साईं योगक्षेमवहाय नमः।।
२७. ॐ श्री साईं आपद्बान्धवाय नमः।। २८. ॐ श्री साईं मार्गबन्धवे
नमः।। २९. ॐ श्री साईं भुक्तिमुक्तिस्वर्गापवर्गदाय नमः।। ३०. ॐ श्री
साईं प्रियाय नमः।। ३१. ॐ श्री साईं प्रीतिवर्धनाय नमः।। ३२. ॐ श्री
साईं अन्तर्यामिणे नमः।। ३३. ॐ श्री साईं सच्चिदात्मने नमः।। ३४. ॐ
श्री साईं नित्यानंदाय नमः।। ३५. ॐ श्री साईं परमसुखदाय नमः।। ३६.
ॐ श्री साईं परमेश्वराय नमः।। ३७. ॐ श्री साईं परब्रह्मणे नमः।। ३८.
ॐ श्री साईं परमात्मने नमः।। ३९. ॐ श्री साईं ज्ञानस्वरूपिणे नमः।।
४०. ॐ श्री साईं जगतः पित्रे नमः।। ४१. ॐ श्री साईं भक्तानां
मातृधातृपितामहाय नमः।। ४२. ॐ श्री साईं भक्ताभयप्रदाय नमः।। ४३.
ॐ श्री साईं भक्तापराधीनाय नमः।। ४४. ॐ श्री साईं भक्तानुग्रहकराय
नमः।। ४५. ॐ श्री साईं शरणागतवत्सलाय नमः।। ४६. ॐ श्री साईं
भक्तिशक्तिप्रदाय नमः।। ४७. ॐ श्री साईं ज्ञानवैराग्यप्रदाय नमः।। ४८.
ॐ श्री साईं प्रेमप्रदाय नमः।। ४९. ॐ श्री साईं संशयहृदयदौर्बल्यपाप-
कर्मवासनाक्षयकराय नमः।। ५०. ॐ श्री साईं हृदयग्रन्थिभेदकाय नमः।।
५१. ॐ श्री साईं कर्मध्वंसिने नमः।। ५२. ॐ श्री साईं शुद्धसत्वस्थिताय
नमः।। ५३. ॐ श्री साईं गुणातीतगुणात्मने नमः।। ५४. ॐ श्री साईं
अनन्तकल्याणगुणाय नमः।। ५५. ॐ श्री साईं अमितपराक्रमाय नमः।।
५६. ॐ श्री साईं जयिने नमः।। ५७. ॐ श्री साईं दुर्धर्षाक्षोभ्याय नमः।।
५८. ॐ श्री साईं अपराजिताय नमः।। ५९. ॐ श्री साईं त्रिलोकेषु
अविघातगतये नमः।। ६०. ॐ श्री साईं अशक्यरहिताय नमः।। ६१. ॐ
श्री साईं सर्वशक्तिमूर्तये नमः।। ६२. ॐ श्री साईं सुरूपसुन्दराय नमः।।
६३. ॐ श्री साईं सुलोचनाय नमः।। ६४. ॐ श्री साईं बहुरूपविश्वमूर्तये
नमः।। ६५. ॐ श्री साईं अरूपाव्यक्ताय नमः।। ६६. ॐ श्री साईं

अचिन्त्याय नमः।। ६७. ॐ श्री साईं सूक्ष्माय नमः।। ६८. ॐ श्री साईं
सर्वन्तार्यामिणे नमः।। ६९. ॐ श्री साईं मनोवागतीताय नमः।। ७०. ॐ
श्री साईं प्रेममूर्तये नमः।। ७१. ॐ श्री साईं सुलभदुर्लभाय नमः।। ७२.
ॐ श्री साईं असहायसहायाय नमः।। ७३. ॐ श्री साईं अनाथनाथ-
दीनबन्धवे नमः।। ७४. ॐ श्री साईं सर्वभारभृते नमः।। ७५. ॐ श्री साईं
अकर्मानेकर्म-सुकर्मिणे नमः।। ७६. ॐ श्री साईं पुण्यश्रवणकीर्तनाय
नमः।। ७७. ॐ श्री साईं तीर्थाय नमः।। ७८. ॐ श्री साईं वासुदेवाय
नमः।। ७९. ॐ श्री साईं सतां गतये नमः।। ८०. ॐ श्री साईं
सत्परायणाय नमः।। ८१. ॐ श्री साईं लोकनाथाय नमः।। ८२. ॐ श्री
साईं पावनानघाय नमः।। ८३. ॐ श्री साईं अमृतांशवे नमः।। ८४. ॐ
श्री साईं भास्करप्रभाय नमः।। ८५. ॐ श्री साईं ब्रह्मचर्यतश्चर्यादिसुव्रताय
नमः।। ८६. ॐ श्री साईं सत्यधर्मपरायणाय नमः।। ८७. ॐ श्री साईं
सिद्धेश्वराय नमः।। ८८. ॐ श्री साईं सिद्धसङ्कल्पाय नमः।। ८९. ॐ
श्री साईं योगेश्वराय नमः।। ९०. ॐ श्री साईं भगवते नमः।। ९१. ॐ
श्री साईं भक्तवत्सलाय नमः।। ९२. ॐ श्री साईं सत्पुरुषाय नमः।। ९३.
ॐ श्री साईं पुरुषोत्तमाय नमः।। ९४. ॐ श्री साईं सत्यतत्वबोधकाय
नमः।। ९५. ॐ श्री साईं कामादिषड्वैरिध्वंसिने नमः।। ९६. ॐ श्री साईं
अभेदानन्दानुभवप्रदाय नमः।। ९७. ॐ श्री साईं समसर्वमतसंमताय
नमः।। ९८. ॐ श्री साईं श्रीदक्षिणामूर्तये नमः।। ९९. ॐ श्री साईं
श्रीवेङ्कटेशरमणाय नमः।। १००. ॐ श्री साईं अद्भुतानन्दचर्याय नमः।।
१०१. ॐ श्री साईं प्रपन्नार्तिहराय नमः।। १०२. ॐ श्री साईं
संसारसर्वदुःखक्षयकराय नमः।। १०३. ॐ श्री साईं सर्ववित्सर्वतोमुखाय
नमः।। १०४. ॐ श्री साईं सर्वान्तर्बहिःस्थिताय नमः।। १०५. ॐ श्री
साईं सर्वमङ्गलकराय नमः।। १०६. ॐ श्री साईं सर्वाभीष्टप्रदाय नमः।।
१०७. ॐ श्री साईं समरससन्मार्गस्थापनाय नमः।। १०८. ॐ श्री साईं
श्रीसमर्थसद्गुरुसाईंनाथाय नमः।।

ॐ साईं ॐ

साईंबाबा व्रत कथा

अध्याय १

श्री साईं बाबा की कृपा

एक समय की बात है। श्रीमती लीलादेवी व उनके पति श्रीधर अहमदाबाद में प्रेमपूर्वक रहते थे। अचानक समय बदला और श्रीधर को व्यवसाय में बहुत घाटा हुआ। उसकी अच्छी-भली चलती दुकान पर ताले डल गए, जिसकी वजह से वह घर बैठ गया। खाली बैठे-बैठे उसका व्यवहार चिड़चिड़ा हो गया। वह अक्सर लीलादेवी को झिड़क दिया करता। पड़ोसी भी उसके स्वभाव में आए परिवर्तन से खिन्न रहने लगे। लीलादेवी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। वह जानती थी कि ईश्वर इस दु:ख की कोई राह जरूर निकालेंगे।

एक रोज लीलादेवी के द्वार एक अद्‌भुत तेजस्वी चेहरे वाले वृद्ध साधु आए और उससे उन्होंने भिक्षा में दाल-चावल माँगा। लीलादेवी ने तुरंत हाथ धोकर महाराज को दाल-चावल दिये और उन्हें नमस्कार किया। महाराज ने खुश होकर उसे आशीर्वाद दिया और लीलादेवी के दु:खों को दूर करने हेतु उसे श्री साईंबाबा के गुरुवार वाले व्रत को करने की विधि समझाई। उन्होंने बताया कि सामर्थ्य अनुसार मानकर ५, ७, ९, ११ अथवा २१ गुरुवार तक साईं बाबा का व्रत करने, विधि से उद्यापन करने, गरीबों को भोजन कराने से उसकी मनोकामना पूर्ण होगी। इस व्रत को करते समय झूठ, छल आदि बुरी आदतों का त्याग करना उचित रहता है। व्रत पूर्ण होने पर यथाशक्ति ७, ११, २१, ५१, १०१ पुस्तकें कृतज्ञता स्वरूप दान करते हैं। श्री साईं के वचन हैं श्रद्धा व सबूरी। इन्हें ध्यान में रखकर व्रत रखें।

इतने सरल व्रत को सुनकर लीलादेवी अत्यंत प्रसन्न हो गई और अगले गुरुवार से ही उसने 'श्री साईं बाबा व्रत' का पालन किया और देखते ही देखते उसके पति के स्वभाव में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया और

उसने फिर से व्यापार चालू किया जो बहुत सफल हुआ। घर पर श्री साईंबाबा की कृपा से सुख-शांति हो गई।

एक दिन लीलादेवी की बहन और उसके पति उससे मिलने आए। श्रीधर भाई और लीलादेवी को खुश देख वे भी बहुत प्रसन्न हुए। लीलादेवी की बहन ने उससे पूछा कि यह चमत्कार कैसे हुआ? मेरे बच्चे बिल्कुल पढ़ाई नहीं करते और किसी का कहना नहीं मानते, बहुत उद्दंड होते जा रहे हैं, जिसकी वजह से सब-कुछ होते हुए भी मैं सुखी नहीं हूँ।

तब लीलादेवी ने उसे साईंबाबा के गुरुवार व्रत की महिमा बताई। इस व्रत की महिमा सुन लीलादेवी की बहन बहुत प्रसन्न हुई और उसने पूर्ण मनोयोग से श्रद्धा व विश्वास से ९ गुरुवार तक यह व्रत किया और जिसका परिणाम यह हुआ कि उसके बच्चे मन लगाकर पढ़ते एवं हमेशा कक्षा में अव्वल आते और साथ ही साथ घर के छोटे-मोटे काम में भी उसका हाथ बँटाते। वह सभी लोगों को इस महान व्रत का प्रभाव बताने लगी और स्वयं भी इस व्रत का पालन करती रही। श्री साईं बाबा ने जैसी कृपा उन पर की, वैसी सभी पर करें। जो पढ़े और सुने उसके भी सभी मनोरथ सिद्ध हो जाएँ।

ऐसी है श्री साईंबाबा व्रत की महिमा। बोलो :-

।। अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगीराज परब्रह्म
श्री सच्चिदानंद सद्‌गुरु साईंनाथ महाराज की जय।।

अध्याय २

व्यवसाय में सफलता

मुम्बई शहर में एक दयालु व्यापारी रवीन्द्रनाथजी रहते थे। शहर में उनकी कपड़े की चार मिलें थी, सभी प्रकार की सुख-समृद्धि थी। अचानक एक-एक कर सभी मिलों में मजदूरों ने हड़ताल कर दी। सेठजी का मन बहुत द्रवित हुआ। मामला गम्भीर था व नेताओं के दबाव की वजह से मिलें शुरू होने के आसार नहीं लग रहे थे।

ऐसे समय में सेठजी के एक दूर के रिश्तेदार का उनसे मिलने आना

हुआ। बातों-बातों में सेठजी ने उसे अपनी समस्या बताई। उस रिश्तेदार ने निश्चिंततापूर्वक कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है, सब कुछ ठीक हो जाएगा। उसने सेठजी को गुरुवार वाला 'श्री साईंबाबा व्रत' करने को कहा। उसने कहा– आप और सेठानी दोनों एक साथ यह व्रत रखें, बाबा की कृपा से सब मंगल होगा। सेठ-सेठानी ने विधि-पूर्वक गुरुवार का व्रत आरंभ किया और व्रत आरंभ करने के दो सप्ताह के भीतर ही सभी मिलें पुनः चालू हो गईं। साईं बाबा की कृपा से कर्ज में डूबे रवीन्द्रनाथजी को एक वर्ष में ही पर्याप्त लाभ हो गया। परिवार में सुख-शान्ति मिली। इसका सारा श्रेय सेठजी ने 'श्री साईंबाबा व्रत' को दिया।

ऐसी है 'श्री साईंबाबा व्रत' की महिमा!

।। अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगीराज परब्रह्म श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईंनाथ महाराज की जय।।

अध्याय ३

कन्या का विवाह सम्पन्न हुआ

कुसुम बहन की बेटी सुनीता वैसे तो बहुत गुणवान थी, परन्तु श्यामवर्ण थी। ऊपर से कुसुम बहन के पति की आर्थिक स्थिति भी साधारण थी। बड़ा दहेज दे सकने की उसकी हैसियत नहीं थी।

सुनीता की उम्र विवाह योग्य हो गई थी, पर उसकी शादी हो नहीं पा रही थी। धीरे-धीरे उसकी आयु के साथ माता-पिता की चिन्ता भी बढ़ने लगी। सुनीता खाना पकाने, सिलाई-कढ़ाई और सभी कार्यों में बहुत कुशल थी, ग्रेजुएट भी थी। स्वभाव से भी वह समझदार और हँसमुख थी, पर फिर भी उसे योग्य वर नहीं मिल पा रहा था। एक दिन सुनीता अपने पड़ोस में सहेली तुलसी के यहाँ गई तो देखा तुलसी एक पुस्तक पढ़ रही है। सुनीता ने पूछा ''तुलसी क्या पढ़ रही हो?'' तब तुलसी ने कहा ''यह 'श्री साईंबाबा व्रत' की किताब है। हमारी बुआ के यहाँ आज इस व्रत का उद्यापन था, जहाँ सभी को एक-एक किताब बाँटी गई।'' जब

सुनीता ने किताब हाथ में ली और कुछ पृष्ठ पढ़े तो साईंबाबा की कृपा से उसके मन में यह व्रत करने की इच्छा जागृत हुई, वह पुस्तक तुलसी से लेकर घर आ गई। गुरुवार को सुबह 21 गुरुवार तक व्रत करने की मन्नत मानकर सुनीता ने 'साईंबाबा व्रत' करने का संकल्प लिया। विधिपूर्वक व्रत शुरू किया और आश्चर्य! उसी रात उनके मामाजी एक अच्छे घर के पढ़े-लिखे सुसंस्कारवान कम्प्यूटर इंजीनियर लड़के का रिश्ता लेकर आए। सुनीता की मामी और लड़के की माँ बचपन की सहेली थी व सुनीता की मामी ने लड़के से सीधे बात कर ली थी। सुनीता के बारे में सुनकर लड़का बहुत उत्साहित था। उसे सुनीता जैसी ही पत्नी की तलाश थी, जो पढ़ी-लिखी व गुणी हो और उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चल सके। सुनीता यह सब जानकर बहुत खुश हुई। एक ही माह में सादगीपूर्ण समारोह में सुनीता का विवाह सम्पन्न हो गया। ऐसी है 'श्री साईंबाबा व्रत' की महिमा!

ऐसी है 'श्री साईंबाबा व्रत' की महिमा!

।। अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगीराज परब्रह्म श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईंनाथ महाराज की जय।।

अध्याय ४

उधारी वसूल हो गई

श्री अशोक कुमारजी का होजियरी का थोक व्यापार था। परिवार में पति-पत्नी और एक पुत्र था। उनका व्यापार बहुत बड़ा नहीं था, पर परिवार की सुख-सुविधा के हिसाब से पर्याप्त था, परन्तु मुसीबत कह कर नहीं आती। उनके व्यापार में उधार देना जरूरी था, नहीं तो बाजार में प्रतिस्पर्धा में वे पीछे रह जाते। ऐसे ही एक व्यापारी की तरफ उनका बढ़ते-बढ़ते चार लाख रुपया उधार फँस गया। उस व्यापारी की नीयत में खोट आ गया और वह रुपये चुकाने में बहाने करने लगा।

अशोक कुमारजी के तो पैरों तले जमीन खिसक गई। उन्हें कंपनियों

की तरफ से तगादे पर तगादे होने लगे। उनके अनुसार एक माह में यदि उन्होंने कंपनी का पैसा जमा नहीं करवाया तो कंपनी उन्हें माल देना बंद कर देगी। अशोक कुमारजी की तो रातों की नींद उड़ गई, न तो उन्हें भोजन में रस आता था न ही किसी और बात में।

अशोक कुमारजी चिंता में बैठे थे, तभी उनके मित्र शर्माजी आ पहुँचे। शर्माजी के पूछने पर अशोक कुमारजी ने उन्हें अपनी चिंता का कारण बताया। शर्माजी ने कहा–"बस इतनी-सी बात! अशोक कुमारजी, सारी चिन्ताएँ छोड़ दीजिए और श्री साईंबाबा की शरण लीजिए। गुरुवार वाला साईंबाबा व्रत कलियुग में तत्काल फल देने वाला है, इसे खुशी-खुशी आरंभ करें और चमत्कार देखें।" ऐसा कहकर शर्माजी ने उन्हें 'श्री साईंबाबा व्रत कथा' की पुस्तक दी और व्रत-विधि समझाई।

अशोक कुमारजी ने सपत्नीक श्रद्धा और विश्वास के साथ व्रत का आरम्भ किया। व्रत आरम्भ करने के चौथे ही दिन वह व्यापारी उनकी दुकान पर आया और कहने लगा कि उनका माल बेचकर उसे बहुत लाभ हुआ है। उन्हें अगले माल की जल्द जरूरत है। साथ ही, उसने पुराना पूरा पैसा तो चुकाया ही, अगले माल के भी रुपये अग्रिम दे गया और रुपये चुकाने में हुई देरी हेतु उसने क्षमा माँगी।

अशोक कुमारजी तो श्री साईं बाबा की ऐसी कृपा देख भावविभोर हो गए। जो रकम वह डूब चुकी मान रहे थे, वह तो वापस आई ही, व्यापार में भी वृद्धि हो गई। इस अनुपम व्रत का लोगों को अधिक से अधिक लाभ हो, इसलिए उन्होंने इस व्रत की दो सौ एक प्रतियाँ अपने स्नेहीजनों में वितरित कीं।

ऐसी है 'श्री साईंबाबा व्रत' की महिमा!

।। अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगीराज परब्रह्म
श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईंनाथ महाराज की जय।।

अध्याय ५

औलाद का सुख

श्री दीपक और चंचल के विवाह को 18 साल हो गए थे, परन्तु उनको संतान का सुख प्राप्त नहीं हुआ था। जिसकी वजह से घर में सबकुछ होने पर भी खालीपन-सा रहता था। वृद्ध सास-ससुर भी घर में नन्हीं किलकारियाँ सुनने को तरस गए थे। कई डॉक्टरों, नीम-हकीमों को दिखाने के बाद भी वह औलाद का मुँह देखने को तरस गए थे।

तभी एक दिन दीपक के ऑफिस में उसी माह मुम्बई से ट्रांसफर होकर आए रमेश ने सभी को लड्डू बाँटे। दीपक के पूछने पर उसने बताया कि 'श्री साईं बाबा व्रत' की कृपा से शादी के 8 साल बाद उन्हें पुत्र प्राप्ति हुई है। दीपक द्वारा पूछने पर उन्होंने उसे पूरी व्रत-विधि समझाई और अगले ही दिन 'सरदार त्रिलोचनसिंह बुक सेलर, इन्दौर-1' द्वारा प्रकाशित 'श्री साईंबाबा व्रत' की एक पुस्तक लाकर दी। चंचल ने पूरे विश्वास और श्रद्धा से 11 गुरुवार व्रत किया और श्री साईंबाबा की कृपा से शीघ्र ही वह गर्भवती हुई और एक सुंदर स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया। अपने कुलदीपक को देख पूरा परिवार प्रसन्न हो गया।

ऐसी है 'श्री साईंबाबा व्रत' की महिमा!

।। अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगीराज परब्रह्म
श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईंनाथ महाराज की जय।।

अध्याय ६

अध्ययन में सफलता

डॉ. गीता माहेश्वरी शहर की एक प्रतिष्ठित डॉक्टर थी। उनके पति का कम आयु में ही स्वर्गवास हो गया था। उनका एक पुत्र था। उनका सपना था कि उनका बेटा भी बड़ा होकर अच्छा डॉक्टर बने और वह था भी बहुत तीक्ष्ण बुद्धि का, 10वीं कक्षा तक वह अपने स्कूल में प्रथम

आता था व उसे स्कूल द्वारा मैडल दिये जाते थे, परन्तु तभी कुछ बुरे मित्रों की संगत में पड़कर उसका ध्यान पढ़ाई से हट गया और 11वीं में उसका परीक्षा परिणाम बहुत बुरा आया। डॉ. गीता को अपना सपना बिखरता-सा लगने लगा। हमेशा प्रसन्नचित्त रहने वाली डॉ. गीता का उदास मुख देखकर उनकी एक मित्र डॉ. रश्मि ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने उसे अपने चिंतित होने की वजह बताई।

डॉ. रश्मि ने उनसे कहा कि दिल छोटा मत करो, श्री साईंबाबा की कृपा से तुम्हारा सपना अवश्य पूरा होगा। तुम बस विश्वासपूर्वक श्री साईंबाबा का अद्भुत गुरुवार वाला व्रत करो।

डॉ. रश्मि द्वारा व्रत की विधि समझकर डॉ. गीता ने उसी सप्ताह से 'श्री साईंबाबा व्रत' का पालन शुरू किया और माने गए गुरुवार व्रत करके आखिरी गुरुवार को उद्यापन कर गरीबों को भोजन कराया और स्वजनों में 101 पुस्तकें 'श्री साईंबाबा व्रत कथा' की वितरित की और साईंबाबा की ऐसी कृपा हुई कि उनके बेटे को सुमति आई और उसने उन बुरे मित्रों की संगत छोड़ दी और जी-जान से पढ़ाई में जुट गया और उस वर्ष पी.एम.टी. परीक्षा में पूरे प्रदेश में प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान पर चयनित हुआ और सबसे अच्छे कॉलेज में उसे प्रवेश मिला। डॉ. गीता आज भी उसकी सफलता के लिए 'श्री साईं बाबा व्रत' का उल्लेख करना नहीं भूलती।

ऐसी है 'श्री साईंबाबा व्रत' की महिमा!

।। अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगीराज परब्रह्म
श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईंनाथ महाराज की जय।।

इन छः अध्यायों में वर्णित लाभान्वित भक्तों के अतिरिक्त सहस्रों अन्य भक्तों को इस अद्भुत व्रत द्वारा चमत्कारिक अनुभव प्राप्त हुए। किसी का टूटता घर बचा, किसी को नौकरी मिली, किसी के पति ने मदिरा त्यागी, किसी का अपने घर का सपना पूरा हुआ, कोई रोग-मुक्त हुआ, कोई कर्ज-मुक्त हुआ। इस व्रत द्वारा अधिकाधिक लोग लाभान्वित हों, इस हेतु भक्तजन इस पुस्तक को जितना हो सके वितरित करें, ताकि इस अद्भुत व्रत का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो। पुस्तक खरीदने के पूर्व असली पुस्तक की पहचान प्रत्येक पृष्ठ पर यह मोनोग्राम अवश्य देखें।

आरती

**आरती साईंबाबा सौख्य दातार जीवा चरण रज धारें।।
दो दासों का सहारा भक्तों का सहारा।। आरती साईंबाबा...
जल जाये अनंग स्व स्वरूप रहें मग्न,
मुमुक्ष जन उबारो हे देवा श्री रंग।।देवा श्री रंग।। आरती साईंबाबा।।१।।
जैसा मन में भाव। तैसा पावे अनुभव। दास पर दया रहे।
ऐसा तिहारा स्वभाव। तिहारा स्वभाव। आरती साईंबाबा।।२।।
तुम्हारा नाम जपना हरे संसृति व्यथा। अपार तव करनी।
मार्ग पायें अनाथा। पायें अनाथा। आरती साईंबाबा।।३।।
कलियुगी अवतार सगुण ब्रह्म साकार। अवतीर्ण हुए हैं।
स्वामी दत्त दिगंबर। दत्त दिगंबर। आरती साईंबाबा।।४।।
आठ दिन में गुरुवार। भक्त ध्याते अपार। प्रभु पद देखें वे।
भव भय निवारें। भय निवारें। आरती साईंबाबा।।५।।
करूँ निछावर। तव चरण रज सेवा। कामना करूँ इसकी।
हे देवाधि देवा। देवाधि देवा। आरती साईंबाबा।।६।।
मैं हूँ दीन चातक निर्मल तोय निज सुख दे दो माधव
यही अपना विरद संभालो। विरद संभोला। आरती साईंबाबा।।७।।**

आरती साईंबाबा की

(चाल : आरती श्री रामायणजी की)

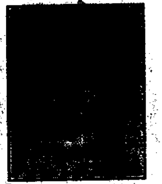

आरती श्री साईंगुरुवर की।। परमानन्द सदा सुरवर की।।धृ.।।
जाकी कृपा विपुलसुखकारी।। दुःख, शोक, संकट, भयहारी।।१।।
शिरडी में अवतार रचाया।। चमत्कार से तत्व दिखाया।।२।।
कितने भक्त चरण पर आये।। वे सुख शांति चिरंतन पाये।।३।।
भाव धरै जो मन में जैसा पावत अनुभव वो ही कैसा।।४।।
गुरु की उदी लगावे तनको।। समाधान लाभत उस मनको।।५।।
साईं नाम सदा जो गावे।। सो फल जग में शाश्वत पावे।।६।।
गुरुबासर करि पूजा-सेवा।। उस पर कृपा करत गुरुदेवा।।७।।
राम, कृष्ण, हनुमान रूप में।। दे दर्शन, जानत जो मन में।।८।।
विविध धर्म के सेवक आते।। दर्शन इच्छित फल पाते।।९।।
जै बोलो साईंबाबा की।। जै बोलो अवधूतगुरु की।।१०।।
'साईंदास' आरती को गावै।। घर में बसि सुख, मंगल पावे।।११।।

पद

साईं रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना।।ध्रु.।।
जाना तुमने जगत्पसारा, सब ही झूठ जमाना।।साईं.।।१।।
मैं अंधा हूँ बंदा आपका, मुझको प्रभु दिखलाना।।साईं.।।२।।
दास गणूँ कहे अब क्या बोलूँ, थक गई मेरी रसना।।साईं.।।३।।
रहम नजर करो अब मोरे साईं।। तुम बिन नहीं मुझे माँ बाप भाई।।ध्रु.।।
मैं अंधा हूँ बंदा तुम्हारा।। मैं ना जानूँ, अल्लाइलाही।।१।।
खाली जमाना मैने गमाया।। साथी आखरका किया न कोई।।२।।
अपने मशिदका झाडू गणूँ है।। मालिक हमारे, तुम बाबा साईं।।३।।

श्री साईं बाबा के ग्यारह वचन

जो शिरडी में जाएगा। आपद दूर भगाएगा।।१।।
चढ़े समाधि की सीढ़ी पर। पैर तले दुःख की पीढ़ी पर।।२।।
त्याग शरीर चला जाऊँगा। भक्त हेतु दौड़ा आऊँगा।।३।।
मन में रखना दृढ़ विश्वास। करे समाधि पूरी आस।।४।।
मुझे सदा जीवित ही जानो। अनुभव करो सत्य पहचानो।।५।।
मेरी शरण आ खाली जाये। हो तो कोई मुझे बताये।।६।।
जैसा भाव रहा जिस जन का। वैसा रूप हुआ मेरे मन का।।७।।
भार तुम्हारा मुझ पर होगा। वचन न मेरा झूठा होगा।।८।।
आ सहायता लो भरपूर। जो माँगा वह नहीं है दूर।।९।।
मुझमें लीन वचन मन काया। उसका ऋण न कभी चुकाया।।१०।।
धन्य-धन्य व भक्त अनन्य। मेरी शरण तज जिसे न अन्य।।११।।

श्री साईं बावनी

।। अवधूत चिन्तन श्री गुरुदेवदत्त ।।

जय ईश्वर जय साईं दयाल। तू ही जगत् का पालनहार।।१।।
दत्त दिगम्बर प्रभु अवतार। तेरे बस में सब संसार।।२।।
ब्रह्माच्युत शंकर अवतार। शरणागत का प्राणाधार।।३।।
दर्शन दे दो प्रभु मेरे। मिटा दो चौरासी फेरे।।४।।
कफनी तेरी इक साया। झोली काँधे लटकाया।।५।।
नीम तले तुम प्रकट हुए। फकीर बन के तुम आये।।६।।
कलयुग में अवतार लिया। पतित पावन तुमने किया।।७।।
शिरडी गाँव में वास किया। लोगों का मन लुभा लिया।।८।।
चिलम थी शोभा हाथों की। बंसी जैसी मोहन की।।९।।
दया भरी थी आँखों में। अमृतधारा बातों में।।१०।।
धन्य द्वारका वो माईं। समा गये जहाँ साईं।।११।।
जल जाता है पाप वहाँ। बाबा की है धूनी जहाँ।।१२।।

भूला भटका मैं अंजान। दे मुझको अपना वरदान।।१३।।
करुणा सिन्धु प्रभु मेरे। लाखों बैठे दर पे तेरे।।१४।।
अग्निहोत्री शास्त्री को। चमत्कार तुमने दिखलाया।।१५।।
जीवनदान शामा पाया। जहर साँप का उतराया।।१६।।
प्रलयकाल को रोक लिया। भक्तों को भयमुक्त किया।।१७।।
महामारी को बेनाम किया। शिरडीपुरी को बचा लिया।।१८।।
प्रणाम तुमको मेरे ईश। चरणों में तेरे मेरा शीश।।१९।।
मन की आस पूरी करो। भवसागर से पार करो।।२०।।
भक्त भीमाजी था बीमार। कर बैठा था सौ उपचार।।२१।।
धन्य साईं की पवित्र उदी। मिटा गई उसकी क्षय व्याधि।।२२।।
दिखलाया तूने विट्ठल रूप। काकाजी को स्वयं स्वरूप।।२३।।
दामू को सन्तान दिया। मन उसका सन्तुष्ट किया।।२४।।
कृपानिधि अब कृपा करो। दीनदयालु दया करो।।२५।।
तन-मन-धन अर्पण तुमको। दे दो सद्गति प्रभु मुझको।।२६।।
मेधा तुम को न जाना था। मुस्लिम तुमको माना था।।२७।।
स्वयं तुम बन के शिवशंकर। बना दिया उसका किंकर।।२८।।
रोशनाई की चिरागों से। तेल के बदले पानी से।।२९।।
जिसने देखा आँखों हाल। हाल हुआ उसका बेहाल।।३०।।
चाँद भाई था उलझन में। घोड़े के कारण मन में।।३१।।
साईं ने की ऐसी कृपा। घोड़ा फिर से वह पा सका।।३२।।
श्रद्धा सबुरी मन में रखो। साईं साईं नाम रटो।।३३।।
पूरी होगी मन की आस। कर लो साईं का नित ध्यान।।३४।।
जान के खतरा तात्या का। दान दिया अपनी आयु का।।३५।।
ऋण बायजा का चुका दिया। तुमने साईं कमाल किया।।३६।।
पशुपक्षी पर तेरी लगन। प्यार में तुम थे उनके मगन।।३७।।
सब पर तेरी रहम नजर। लेते सबकी खुद ही खबर।।३८।।
शरण में तेरे जो आया। तुमने उसको अपनाया।।३९।।

दिये हैं तुमने ग्यारह वचन। भक्तों के प्रति लेकर आन।।४०।।
कण-कण में तुमने है भगवान। तेरी लीला शक्ति महान्।।४१।।
कैसे करूँ तेरे गुणगान। बुद्धिहीन मैं हूँ नादान।।४२।।
दीनदयालु तुम हो दाता। हम सबके तुम हो त्राता।।४३।।
कृपा करो अब साईं मेरे। चरणों में ले ले अब तुम्हारे।।४४।।
सुबह शाम साईं का ध्यान। साईं लीला के गुणगान।।४५।।
दृढ़ भक्ति से जो गायेगा। परमपद को वह पायेगा।।४६।।
हर दिन सुबह शाम को। गाये साईं बावनी को।।४७।।
साईं देंगे उसका साथ। लेकर हाथ में हाथ।।४८।।
अनुभव तृप्ति के यह बोल। शब्द बड़े हैं यह अनमोल।।४९।।
यकीन जिसने मान लिया। जीवन उसने सफल किया।।५०।।
साईं शक्ति विराट स्वरूप। मनमोहक साईं का रूप।।५१।।
गौर से देखो तुम भाई। बोलो जय सद्गुरु साईं।।५२।।

नाम स्मरण

जय ॐ, जय ॐ, जय जय ॐ, ॐ ॐ, ॐ ॐ, जय जय ॐ।
जय साईं, जय साईं, जय साईं ॐ, ॐ साईं, ॐ साईं, ॐ साईं।

साईं बाबा का भोग

भोग लगाओ साईं बाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
प्रीति के पकवान बनाए और भाव भरे भोजन मैंने अपने हाथ से
कहो तो मँगाऊँ ताजा मेवा बरफी पेड़ा पकवान रे मेरा प्रेम भरा थाल
गंगा जमुना के नीर लाऊँ प्रेम से पान कराऊँ

भोग लगाओ साईं बाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल शबरी सुदामा और विदुर की भाजी ऐसी तृप्ति कर लेना मेरे साईं बाबा भोग लगाओ साईं बाबा मेरा प्रेम भरा थाल। लोंग सुपारी भरे पान के बीड़े, मुखवास करो मेरे साईं बाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल, भक्तों के साईं प्यारे तेरी हे जय-जयकार मेरा प्रेम भरा थाल।

श्री साईं वंदना

यह सौंप दिया सारा जीवन, साईं नाथ तुम्हारे चरणों में।
अब जीत तुम्हारे चरणों में, अब हार तुम्हारे चरणों में।।
मैं जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे अवगुण दोष समर्पित हों, हे नाथ तुम्हारे चरणों में।।
अब सौंप दिया...

मेरा निश्चय है बस एक यही, इक बार तुम्हें मैं पा जाऊँ।
अर्पित कर दूँ दुनिया भर का सब प्यार तुम्हारे चरणों में।
अब सौंप दिया...

जब-जब मानव का जन्म मिले, तब-तब चरणों का पुजारी बनूँ।
इस सेवक की एक-एक रग का हो तार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया...

मुझमें तुममें बस भेद यही, मैं नर हूँ, तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे चरणों में।
अब सौंप दिया...

प्रार्थना

साईं कृपा से व्रत कथा लिखवाई, भक्तों के हांथों में पहुँची।
साईं गुरुवार व्रत करे जोई, उसका कल्याण तो हरदम होई।
घर बार सुख शांति होवे, साईं ध्यान करे जो सोवे।
भोग लगावे निसदिन बाबा को जोई उसके घर में कमी रहे न कोई।
बाबा की प्रार्थना करिए, साईं मेरे दुःख को हरिए।
शिरडी में बाबा की मूर्ति है प्यारी, भक्तों को लगे हैं न्यारी।
मेरे साईं मेरे बाबा, मेरा मन्दिर मेरा काबा।
राम भी तुम हो शाम भी तुम हो, शिवजी का अवतार भी तुम हो।
हनुमान तुम ही हो साईं, तुम्हीं ने थी लंका जलाई।
कलियुग में तुम आए थे साईं, भक्तों के कल्याण को जाई।
भक्ति भाव से पढ़े कथा जो, उसकी इच्छा पूरी हो जाई।
बाबा मेरे आओ साईं हमको दर्शन दिखलाओ साईं।
तुम बिन दिल नहीं है लगता, आँसू क्या दरिया है निकलता।
जब-जब देखें तेरी मूरत, तब-तब भीग जाए मेरी सूरत।
अँधन को आँखें हैं देते, दुःख भक्तों के खुद हैं सहते।
बाँझन को पुत्र हैं देते, दीन दुःखी के दुःख हर लेते।
तुम-सा नहीं है कोई सहाई, जपते रहें हम साईं-साईं।
नाम तुम्हारा मंगल कारी, भवसागर से भक्तों को तारी।
बाबा मेरे अवगुण माफ कर देना, भक्ति मेरी को ही लेना।
तुम्हीं हो मेरे बाबा साईं, सोच-सोच हम यह हर्षाई।
बाबा दया हम पर करना, अपने चरणों में ही रखना।

चरणों में तुम्हारे शीतल छाया, बचे रहेंगे नहीं पड़ेगी मंद छाया।
हमरी बुद्धि निर्मल करना, जग की भलाई हमसे करना।
हमको साधन बना लो बाबा, दया कृपा क्षमा दो बाबा।
अज्ञानी हम बालक मंदबुद्धि, तेरी दया से हो मन की शुद्धि।
पाप ना कोई हमसे होने पाए, दु:ख कोई जीव हमसे ना पाए।
हर पल भला हम करते जाएँ, गुणगान हर पल तेरे गाएँ।

दोहा

१. साईं हम पर कृपा करो, बालक हैं अनजान।
मंदबुद्धि हम जीव हैं, हमको लो आन संभाल।
२. व्रत आपका कर रहे, दो आशीष यह आन।
विघ्न पड़े न इसमें कोई, कृपा करो दीनदयाल।

।।ओ३म् श्री साईं।।

।। श्री साईंनाथाय नमो नमः।।

प्रसाद-याचना

अन्त में हम सर्वशक्तिमान परमात्मा से कृपा या प्रसादयाचना करते हैं–
"हे ईश्वर! पाठकों और भक्तों को श्री साईं-चरणों में पूर्ण और अनन्य भक्ति दो। श्री साईं का मनोहर स्वरूप ही उनकी आँखों में सदा बसा रहे और वे समस्त प्राणियों में देवाधिदेव साईं भगवान का ही दर्शन करें। एवमस्तु।"

।। श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभं भवतु।।

सप्ताह पारायण: सप्तम विश्राम

।। ॐ श्री साईं यश:काय शिरडीवासिने नम:।।